DR. RANJEET KUMAR
Dept. Of History
H. D. Jain College Ara
M.A , sem.- 2, CC-7, unit-5

किसान सभा आंदोलन **(Kisan Sabha Movement)**

1857 का सिपाही विद्रोह (Indian Rebellion of 1857) केवल सैनिकों का विद्रोह नहीं था, बल्कि इसमें ग्रामीण कृषि समुदाय (किसान वर्ग) की असंतुष्टि और जमींदारी व्यवस्था के खिलाफ गुस्सा भी शामिल था। 1857 के बाद ब्रिटिश सरकार ने अवध (Awadh) जैसे क्षेत्रों को सीधा प्रशासन में शामिल कर लिया और भूमि पुनः तालुकदारों (बड़े जमींदार) को दे दी। इससे किसानों का शोषण और बढ़ गया।

1857 के बाद की परिस्थितियाँ और किसानों की स्थिति

1856 में अवध का विलय और 1857 के विद्रोह के बाद:

1. तालुक़दारों का पुनरुद्धार: अंग्रेजों ने विद्रोह के बाद अवध के बड़े जमींदारों (तालुक़दारों) की ज़मीनें वापस दिलाई। इससे उनकी ताकत में वृद्धि हुई और वे किसानों पर बिना रोक-टोक अत्याचार कर सके।

2. उच्च किराया और बढ़ी लागतें: किसान को अपनी खेती की उपज का बड़ा हिस्सा जमींदारों को किराये के रूप में देना पड़ता था। किराया सामान्य तौर पर रिकॉर्ड दरों से कहीं ऊपर था।

3. बेदखली (Summary Eviction): यदि किसान किराया नहीं दे पाता तो ज़मीन से निकाल दिया जाता था। इससे किसान स्थिरता खो रहा था और कर्ज़ में फँस गया था।

4. अवैध लेवी और नज़राना: नवीनीकरण शुल्क या नज़राना नामक अवैध कर लगाया जाता था, जिससे किसानों पर अतिरिक्त बोझ पड़ा।

5. पहली विश्व युद्ध का प्रभाव: 1914-18 के दौरान खाद्य सामग्री और अन्य आवश्यक वस्तुओं की कीमतें बढ़ गईं। किसानों की आर्थिक स्थिति बिगड़ गई।

इन कारणों से किसानों के जीवन स्तर में गिरावट आई और वे संगठित रूप से अपने हक़ के लिए खड़े होने लगे।

किसान सभा का संगठन और विकास

1918 में लखनऊ में किसानों का पहला संगठित संघ United Provinces Kisan Sabha स्थापित हुआ। इसका उद्देश्य था किसानों के अधिकारों को मान्यता देना और शोषण के खिलाफ संघर्ष को व्यवस्थित करना।

मुख्य तथ्य:

- स्थापना: फ़रवरी 1918 में गौरी शंकर मिश्रा और इन्द्र नारायण द्विवेदी ने संयुक्त प्रांत किसान सभा का गठन किया।
- इसका समर्थन मदन मोहन मालवीय जैसे राष्ट्रीय नेताओं ने भी किया।
- जून 1919 तक इसके लगभग 450 शाखाएँ बन गईं।

अवध किसान सभा का गठन

राष्ट्रीय आंदोलन में मतभेद की वजह से अक्टूबर 1920 में अवध किसान सभा अलग से अस्तित्व में आई। इसका लक्ष्य किसानों को और बेहतर रूप से संगठित करना था।

आंदोलन के मुख्य उद्देश्य और मांगें

किसान सभा आंदोलन का केंद्रित लक्ष्य था:

1. किराये में कमी: किसान अनावश्यक ऊँचे किराये का विरोध करते थे।

2. बेदखली का अंत: बिना नोटिस और सुरक्षा के किसानों को ज़मीन से हटाने के विरुद्ध आवाज़ उठाना।

3. अवैध लेवी का विरोध: नज़राना और अन्य अवैध शुल्कों को समाप्त करना।

4. आर्थिक राहत: खाद्य सामग्री और अन्य ज़रूरतों की बढ़ती कीमतों से उत्पन्न संकट का समाधान।

ये सभी मांगें सीधे किसानों की रोज़मर्रा की समस्याओं से जुड़ी थीं, न कि तत्काल स्वतंत्रता संग्राम से (हालांकि बाद की भूमिकाएँ इस संघर्ष से जुड़ती चली गईं)।

- आंदोलन की गतिविधियाँ और संघर्ष के रूप
- आंदोलन ने कई तरह की संगठित गतिविधियों को जन्म दिया:
- किसानों ने बेदखाल भूमि को न जोतने का निर्णय लिया।
- उन्होंने हारी और बेगर (अनपेड लेबर) का बहिष्कार किया।
- वे उन लोगों का बॉयकॉट करते थे, जो इन मांगों को स्वीकार नहीं करते थे।
- गांवों में पंचायतों के माध्यम से विवादों को सुलझाया गया।

1921 में आंदोलन का स्वरूप और अधिक संघर्षात्मक हो गया, जिसमें बाज़ारों, घरों और अनाज भंडारों के विरुद्ध सक्रियता भी बढ़ी और पुलिस से टकराव हुआ।

- आंदोलन के प्रभाव और परिणाम
- आंदोलन की प्रमुख उपलब्धियाँ और लक्षण:
- संगठन का निर्माण

किसानों में जागरूकता आई और वे संगठित होकर अपने हक़ के लिए लड़ने लगे। इस श्रेणी में किसान सभा का गठन खेती में लगे लोगों को एक मंच पर लेकर आया।

सरकार का दमन

ब्रिटिश प्रशासन ने विरोध को दबाने के लिए कड़ी कार्रवाई की। कुछ नेताओं को गिरफ्तार किया गया और रोकथाम के प्रयास किए गए।

अवध किराया (संशोधन) अधिनियम

सरकार ने Awadh Rent (Amendment) Act पारित किया, जिससे कुछ राहत देने का दावा किया गया, लेकिन व्यापक समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं हुआ। इसी अधिनियम ने आंदोलन को भी कमजोर किया।

दीर्घकालिक प्रभाव

यह आंदोलन स्वतंत्रता संग्राम के साथ किसानों के आधे संगठित संघर्षों में से पहला था जिसने कृषि समुदाय को राष्ट्रीय मंच पर ला कर खड़ा किया। इसके प्रभाव से आगे अनेक किसान आंदोलन (जैसे कि खेड़ा आंदोलन, बारदोली सत्याग्रह आदि) हुए, जिनका सीधा संबंध किसानों के अधिकार और शोषण के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध से था।

सारांश

किसान सभा आंदोलन (1857 के संदर्भ में) वास्तव में 1918-22 के समय में उत्तर भारत, विशेषकर उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र का एक गंभीर कृषि संघर्ष था। 1857 के बाद की शोषणकारी कृषि नीतियों और युद्ध के परिणामस्वरूप आर्थिक कठिनाइयों ने किसानों को संगठित रूप से अपनी स्थिति सुधारने के लिए खड़ा कर दिया। इस आंदोलन ने किसानों को सरकारी नीतियों के खिलाफ जागरूक किया और आगे चलकर आधुनिक भारत के किसान संघर्षों की नींव रखी।